एक रात को उन्होंने कॅालेज के अहाते में बडी-सी दूरबीन लगायी और ग्रह का ज्ञान प्राप्त करने के लिए छात्रों को उन्होंने आमन्त्रित किया | उन्ही में से बलवन्तराव भी एक थे और वे दर्शकों की पहली पंक्ति में जाने के लिए धक्का- मुक्की कर रहे थे |

केरुनाना ने प्यार से उन्हें डाँटते हुए कहा, " अरे बलवन्त, जरा रुको भी! ऐसी भी क्या जल्दी है? तुम्हारी बारी आने पर तुम्हें भी मौका मिलेगा देखने का | दूरबीन कहीं जा तो नहीं रही है उडकर !"

क्या बलवन्तराव को यह मालूम नहीं था | लेकिन वे थे ही बडे उतावले हो रहे हो | कोई एकाध काम करने का विचार मन में आते ही वे उसके लिए अधीर हो जाते | उन्हें मन मसोसकर वहीं रुकना पडा |

अन्ततः बलवन्तराव की बारी आयी | बलवन्तराव आगे हो लिये और दूरबीन में देखने लगे | उन्हें तो लीपी हुई जमीन के अलावा कुछ नहीं दिखाई पड़ रहा था!

बलवन्तराव ने कहा, "नाना, यानी कि सर , मुझे तो कुछ नहीं दिखाई पडता!"

केरुनाना ने हॅसकर जवाब दिया, "अरे बाबा, एकदम थोडे ही दिखाई देगा ! वह बटन घुमाकर दूरबीन सही तरीके से एडजस्ट कर लो |"

बलवन्तराव ने ठीक वैसे ही किया और अनगिनत ग्रह-तारों से लबालब आकाश के दर्शन उन्हें हूए | लम्बोडे सिर पर चुटिया मानो झन्डे-सी फहर रही थी, जैसे धूमकेतु की पूँछ हो | और बलवन्तराव हतप्रभ-से देख रहे थे | दो भेदक, ऊर्जस्वल ऑखें इनसान की कुव्वत से परे बसी उस अनोखी दुनिया का नजारा तन्मयता से देखती रहीं |

ग्रह-तारों को देखकर बलवन्तराव की बुध्दि में सिहरन-सी हुई | उनके शरीर पर रोंगटे खडे हुए | उन्होंने ने कहा, "मैंने मन-ही-मन जो कल्पना की थी उससे कहीं अधिक जटिल दुनिया है यह |"

केरुनाना ने कहा,"इसका विस्तार अनन्त है, अथाह है | लेकिन इसके प्रत्येक ग्रह-तारे का मार्ग और उसकी गति का गणित परमात्मा ने पहले से ही बना रखा है |"

परमात्मा के इस भव्य गणित की व्याप्ति को बलवन्तराव हैरत से देखते रहे |

केरुनाना ने हॅसकर कहा, "सिर्फ देख रहे हो? कुछ समझते भी हो इसका रहस्य ?"

बलवन्तराव ने जबाब दिया,"अब उसी के पीछे पडूँगा | आप मुझे किताबों के नाम बताइए, बस |"

केरुनाना ने नसीहत दी, "पहले ऑखों से देख लो | पुस्तके बाद में पढना | यह है क्रूतिका नक्षत्र | दो-ढाई हजार साल पहले वह थोडा-सा इस ओर आया था | यह है म्रूगशीर्ष, यह अभी भि इधर से उधर गतिशील है | अरे बाबा, यह आकाश यानी संसार का कैलेण्डर है कैलेण्डर! इसका रहस्य जानकर सही काल-निर्णय किया जा सकता है |"

अकाश दर्शन के बाद बलवन्तराव अपने कमरे में गये | वे बिल्कुल चुप्पी साधे हुए थे | एक अनोखे आनन्द से अभीभूत हो उठे थे वे | यह अनुभूत आनन्द अनूठी खुशियॉ उनके लिए लाया था | उन्हें लगा, "बस, जिन्दगी भर इसी में गोता लगाते रहेंट कहीं एकान्त में बैठकर विश्व-रचना की यह गुत्थी सुलझाते रहें |"

छत की ओर टकटकी लगाये, देर रात तक वे यही सोचते रहे |

ग्रह-तारें अरबों-खबरों मील की दूरी पर होने के बावजूद अपने निर्धारित मार्ग से यन्त्रवत् परिक्रमा करतें हैं | उन्हें सिर्फ देखकर सोलह-सत्रह साल के युवक को चैन नहीं आया | उसे अपने हमउम्र दोस्तों से गपशप, हॅसीं-मजाक, धींगा-मुश्तीकिये बिना खाना हजम नहीं होता था | बलवन्तराव उसका अपवाद नहीं थे |

छात्रावास में उनके साथ साठे नामक एक छात्र रहता था | वह कविताओं- उपन्यासों का बडा ही शौकीन था | जब देखो, किताबें पढ़ रहा होता...लेटे-बैठे किताबें पढ़ने का ही भुत उसके दिमाग पर सवार रहता | वह मितभाशी था, यार दोस्तों में रहना भी उसे पसंद नही था, चेहरे पर हरदम उदासी छायी रहती थी |

उसे टिपटॉप रहने का शॉक था | करीने से कटे हूए बालों का बडा-सा घेरा साहब ही लगता शायद | तलवारकरकट मूछें और हफ्ते में दो ही नहीं, तीन बार घूटी हुई दाढ़ी, रेशमी किनारियों वाली महीन धोती और चटख रंग की पगडी....इसी हुलिये में उसे देखा जा सकता था |

जहिर है कि साठे जी अपने दोस्तों में सदा हॅसी मजाक का विषय बन जाते थे | बलवन्तराव तो उन्हे घुटते-घुटते रहनेवाला यक्ष कहा करते थे | कई तरीके से उनका मजाक उडाया करते थे |